SHODH SAMAGAM

ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)

बिहार में उच्च शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण पद्धति का मूल्यांकन

शैलेन्द्र कुमार सिंह, (Ph.D.), शिक्षा संकाय,
सुप्रिया कुमारी केशरी, शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय, विश्रामपुर, पलामू, झारखंड, भारत

ORIGINAL ARTICLE

Corresponding Authors
शैलेन्द्र कुमार सिंह, (Ph.D.), शिक्षा संकाय,
सुप्रिया कुमारी केशरी, शोधार्थी, शिक्षा संकाय,
रामचन्द्र चंद्रवंशी विश्वविद्यालय,
विश्रामपुर, पलामू, झारखंड, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 23/06/2022
Revised on : -----
Accepted on : 30/06/2022
Plagiarism : 07% on 24/06/2022

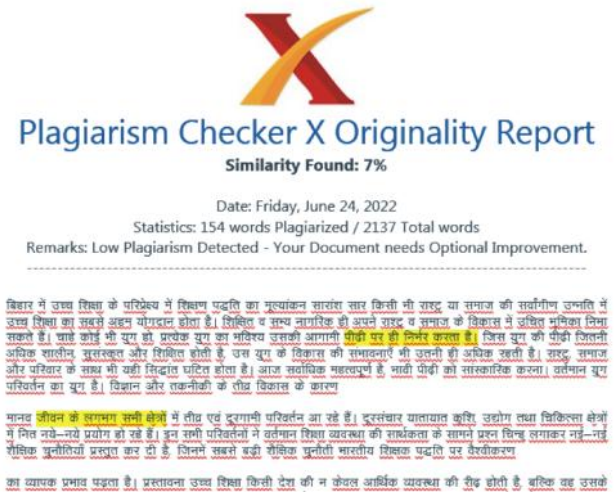

Plagiarism Checker X Originality Report
Similarity Found: 7%

Date: Friday, June 24, 2022
Statistics: 154 words Plagiarized / 2137 Total words
Remarks: Low Plagiarism Detected - Your Document needs Optional Improvement.

बिहार में उच्च शिक्षा के परिप्रेक्ष्य में शिक्षण पद्धति का मूल्यांकन सारांश सार किसी भी राष्ट्र या समाज की सर्वांगीण उन्नति में उच्च शिक्षा का सबसे अहम योगदान होता है। शिक्षित व सभ्य नागरिक ही अपने राष्ट्र व समाज के विकास में उचित भूमिका निभा सकते हैं। चाहे कोई भी युग हो, प्रत्येक युग का भविष्य उसकी आगामी पीढ़ी पर ही निर्भर करता है। जिस युग की पीढ़ी जितनी अधिक शालीन, सुसंस्कृत और शिक्षित होती है, उस युग के विकास की संभावनाएँ भी उतनी ही अधिक रहती है। राष्ट्र, समाज और परिवार के साथ भी यही सिद्धांत घटित होता है। आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, भावी पीढ़ी को सांस्कारिक करना। वर्तमान युग परिवर्तन का युग है। विज्ञान और तकनीकी के तीव्र विकास के कारण

मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में तीव्र एवं दूरगामी परिवर्तन आ रहे हैं। दूरसंचार यातायात कृषि, उद्योग तथा चिकित्सा क्षेत्रों में नित नये–नये प्रयोग हो रहे हैं। इन सभी परिवर्तनों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की सार्थकता के सामने प्रश्न चिन्ह लगाकर नई–नई शैक्षिक चुनौतियाँ प्रस्तुत कर दी है, जिनमें सबसे बड़ी शैक्षिक चुनौती भारतीय शिक्षक पद्धति पर वैश्वीकरण

का व्यापक प्रभाव पड़ता है। प्रस्तावना उच्च शिक्षा किसी देश की न केवल आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ होती है, बल्कि वह उसके

शोध सार

किसी भी राष्ट्र या समाज की सर्वांगीण उन्नति में उच्च शिक्षा का सबसे अहम योगदान होता है। शिक्षित व सभ्य नागरिक ही अपने राष्ट्र व समाज के विकास में उचित भूमिका निभा सकते हैं। चाहे कोई भी युग हो, प्रत्येक युग का भविष्य उसकी आगामी पीढ़ी पर ही निर्भर करता है। जिस युग की पीढ़ी जितनी अधिक शालीन, सुसंस्कृत और शिक्षित होती है, उस युग के विकास की संभावनाएँ भी उतनी ही अधिक रहती है। राष्ट्र, समाज और परिवार के साथ भी यही सिद्धांत घटित होता है। आज सर्वाधिक महत्वपूर्ण है, भावी पीढ़ी को सांस्कारिक करना। वर्तमान युग परिवर्तन का युग है। विज्ञान और तकनीकी के तीव्र विकास के कारण मानव जीवन के लगभग सभी क्षेत्रों में तीव्र एवं दूरगामी परिवर्तन आ रहे हैं। दूरसंचार यातायात, कृषि, उद्योग तथा चिकित्सा क्षेत्रों में नित नये–नये प्रयोग हो रहे हैं। इन सभी परिवर्तनों ने वर्तमान शिक्षा व्यवस्था की सार्थकता के सामने प्रश्न चिन्ह लगाकर नई–नई शैक्षिक चुनौतियाँ प्रस्तुत कर दी है, जिनमें सबसे बड़ी शैक्षिक चुनौती भारतीय शिक्षक पद्धति पर वैश्वीकरण का व्यापक प्रभाव पड़ता है।

मुख्य शब्द

उच्च शिक्षा, चुनौतियाँ, वैश्वीकरण.

प्रस्तावना

उच्च शिक्षा किसी देश की न केवल आर्थिक व्यवस्था की रीढ़ होती है, बल्कि वह उसके सामाजिक चिंतन की बुनियाद, सांस्कृतिक बनावट की समझ और राजनीतिक प्रतिष्ठा का भी परिचायक होता है। यह अनायास नहीं है कि दुनिया के शैक्षणिक मानचित्र पर अमेरिका, इंग्लैंड या पश्चिमी देशों के विश्वविद्यालयों और संस्थाओं का वर्चस्व है। एशियाई देश इस मामले में

थोड़े पीछे चल रहे हैं। हालांकि सिंगापुर, दक्षिण कोरिया, जापान और चीन इस दिशा में कदम बढ़ाने की कोशिश कर रहे हैं। इस मामले में हमारा भारत थोड़ा पीछे चल रहा है। हमारे यहाँ उच्च शिक्षा के स्तर पर विशेष परिवर्तन की आवश्यकता है। स्नातक और स्नातकोत्तर स्तर से लेकर पी.एच.डी. स्तर तक प्रवेश और कार्य प्रणाली में सुधार की है। शिक्षा किसी भी राष्ट्र की उसकी सभ्यता एवं संस्कृति की मूलधारा से जोड़नेवाले जीवनशक्ति है। यह किसी राष्ट्र को विकसित करने, उसके उत्थान हेतु स्थायी ऊर्जा प्रदान करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। यह देश तथा समाज के लिए सुयोग्य, उपयोगी, संवेदनशील एवं उत्तरदायी नागरिकों के निर्माण में अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा अर्थात एम.ए., एम.एस.सी., एम.कॉम, एम.टेक, एम.डी., एम.एस. आदि उच्चतर शिक्षा का एक तरह से सबसे महत्वपूर्ण पायदान है, क्योंकि एक तरफ जहाँ इस स्तर पर आकर विद्यार्थी किसी एक विषय में मास्टर होता है और माना जाता है कि उस विषय में व्यक्ति सम्यक, सम्पूर्ण और श्रेष्ठ ज्ञान से सम्पन्न है। दूसरी तरफ यह रिसर्च एण्ड डेवलपमेंट की आरंभिक सीढ़ी भी है, क्योंकि किसी विषय में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने से या उसके बाद ही उस विषय के बारे में शोधपूरक सवालों, विश्लेषण, चिंतन और अनुसंधान की शुरूआत होती है, लेकिन अफसोस के साथ कहना पड़ता है कि प्रवेश पाठ्यक्रम और अध्ययन प्रणाली में स्नातकोत्तर स्तर की शिक्षा को हमारे शिक्षाविदों ने पूरी गंभीरता से नहीं लिया है।

रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार मध्ययुगीन यूरोप की तरह हमारे देश में शास्त्र शिक्षा ही प्रधान थी। यह शिक्षा विशेष रूप से पाठशालाओं में दी जाती थी, लेकिन इस विद्या की पृष्ठभूमि सारे देश में व्याप्त थी। 1857 ई0 में मुम्बई, चेन्नई तथा कोलकता में विश्वविद्यालयों की स्थापना की गई। ब्रिटिश शासन काल में आधुनिक शिक्षा का विकास हुआ। उच्च शिक्षा के परिक्षेत्र को विस्तृत किया गया। रवीन्द्रनाथ टैगोर के अनुसार आधुनिक शिक्षा प्राप्त व्यक्तियों में एक विशेष वैशिष्ट्य बोध का अनुभव होता है। आमजन के साथ उनका सामंजस्य नहीं हो पाता है। फलतः देश में शिक्षित तथा अशिक्षित वर्ग का विकास हुआ। शिक्षित तथा अशिक्षित वर्गों में सामाजिक एवं आर्थिक असमानता की स्थिति उत्पन्न हुई। स्वाधीनता के बाद यह विभेद मौजूद है। अतः प्रस्तुत शोध में शिक्षकों के दायित्वों तथा शिक्षण पद्धति का मूल्यांकन किया जाएगा। उच्च शिक्षा के सामाजिक सारोकार से जुड़े सवालों को रेखांकित किया जाएगा। सूचना क्रांति ने उच्च शिक्षा के क्षेत्र में व्यापक पैमाने पर बदलाव को उत्पन्न किया। ज्ञान के क्षेत्र में विकास हुआ है। इंटरनेट, ईमेल, फेसबुक, ब्लॉग तथा अन्य स्रोतों के आधार पर देश और दुनिया के किसी भी हिस्से से ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। प्रस्तुत शोध के आधार पर यह मूल्यांकन किया जाएगा कि बिहार के उच्च शिक्षण संस्थानों में इंटरनेट तथा Online Class की सुविधा उपलब्ध है अथवा नहीं। विज्ञान के क्षेत्र में लगातार नये प्रयोग तथा अविष्कार का दौड़ जारी है। अध्ययन के आधार पर यह पता लगाने का प्रयास किया जाएगा कि विज्ञान के छात्रों के लिए प्रयोगशाला की स्थिति क्या है? उच्च शिक्षा के क्षेत्र में शिक्षण पद्धति के साथ व्यक्तित्व का विकास तथा अनुशासन, खेलकूद, एन.सी.सी., राष्ट्रीय सेवा योजना तथा अन्य रचनात्मक कार्यों से जुड़ा हुआ है या नहीं? अतः प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर उच्च शिक्षण संस्थान के इन सभी पहलुओं का अध्ययन किया जाएगा। अतः आवश्यक है कि शिक्षा में गुणात्मकता का ध्यान देते हुए माध्यमिक शिक्षा प्रणाली का पुनर्गठन कर इसे सशक्त व जनोपयोगी बनाया जाए, जिससे इस अवस्था में प्रवेश करने वाले किशोर–छात्र–छात्राएँ शिक्षणोपरान्त सुयोग्य नागरिक बनकर जीवन में प्रवेश करके समाज एवं राष्ट्र की उन्नति कर सके।

विश्व का ऐसा कोई भी समाज है, जहाँ व्यक्तियों में पूर्ण समानता पाई जाए। सामाजिक असमानता एक समस्या तब बन जाती है, जब सामाजिक व्यवस्था के अंतर्गत सामाजिक मूल्यों एवं प्रतिमानों के कारण व्यक्तियों के विकास के अवसर समान रूप से प्राप्त नहीं हो पाते। जब किसी समाज में लिंग के आधार पर ऊँच–नीच की स्थिति प्रदान की जाती है, तब इसी स्थिति को लैंगिक असमानता कहते हैं, जो सामाजिक असमानता का एक स्वरूप है। सैद्धान्तिक दृष्टि से भारतीय समाज में स्त्रियों की स्थिति को आदर्श रूप में प्रस्तुत किया गया, परन्तु व्यवहारिक दृष्टि से स्त्रियों के साथ भेदभावपूर्ण, व्यवहार तथा उनका तिरस्कार, अपमान एवं प्रताड़ना आज भी जारी है।

अध्ययन का परिक्षेत्र एवं मुद्दा

प्रख्यात् शिक्षाविद् तथा इलाहाबाद विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति डॉ. अमरनाथ झा के अनुसार उच्च शिक्षा तथा शिक्षण पद्धति के क्षेत्र में निम्नलिखित बिन्दुओं को ध्यान में रखना चाहिएः

(i) विश्वविद्यालयों में छात्रों की अधिक संख्या होने पर पठन–पाठन तथा शिक्षण पद्धति प्रभावित होता है। उनके अनुसार उपलब्ध संसाधन के अनुरूप ही छात्रों का नामांकन किया जाना चाहिए।

(ii) समय के अनुरूप पाठयक्रम का होना अपेक्षित है। अतः पाठ्यक्रम में लगातार बदलाव करने की आवश्यकता होती है।

(iii) विश्वविद्यालय के छात्र सांस्कृतिक दृष्टि से अधिक प्रखर नहीं दिखाई पड़ते हैं। उनमें आत्म अभिव्यक्ति की क्षमता का अभाव होता है। उनमें सामान्य ज्ञान के प्रति अधिक अभिरूचि नहीं होती है, अतः उच्च शिक्षण संस्थानों में उपर्युक्त क्षेत्रों में पहल करने की आवश्यकता है।

(iv) वर्तमान भारत में उच्च शिक्षा के क्षेत्रों में तकनीकी शिक्षा की अधिक आवश्यकता है।

अतः प्रस्तुत शोध के परिक्षेत्र एवं मुद्दों को रेखांकित करने में डॉ. अमरनाथ झा के द्वारा प्रस्तुत उपागम का उपयोग किया जाएगा। जाहिर है कि प्रस्तुत शोध में शिक्षण संस्थानों में उपलब्ध अध्ययन केन्द्रों, रोजगारोन्मुखी पाठ्यक्रमों एवं तकनीकी शिक्षा का मूल्यांकन किया जाएगा।

ज्ञान के क्षेत्र में योगदान

बिहार में उच्च शिक्षा संक्रमण के दौड़ में है। बाजारवाद तथा भूमंडलीकरण के दौड़ में परम्परागत अध्ययन पद्धति का कोई विशेष उपयोग नहीं रह गया है। सूचना क्रांति के संसाधनों का उच्च शिक्षा के क्षेत्र में अभाव है। शिक्षकों तथा छात्रों कम्प्यूटर तथा अन्य तकनीकी जानकारी का अभाव पाया जाता है। अधिकतर उच्च शिक्षण संस्थानों में परम्परागत पाठ्यक्रमों का उपयोग होता है। फलतः शिक्षित बेरोजगार संख्या में लगातार अभिवृद्धि हो रही है। अतः वर्तमान शोध के आधार पर उच्च शिक्षण संस्थानों का एक नई शिक्षा प्राप्त हो सकती है।

अध्ययन का उद्देश्य

(i) प्रस्तुत शोध उत्तर बिहार के उच्च शिक्षण संस्थानों में शिक्षण पद्धति के गहन एवं गंभीर मूल्यांकन से जुड़ा हुआ है। अतः प्रस्तुत शोध के आधार पर उच्च शिक्षण संस्थानों के शिक्षण पद्धति का मूल्यांकन किया जाएगा।

(ii) प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर शिक्षण पद्धति तथा सूचना क्रांति के बीच मौजूद संबंधों का विश्लेषण किया जाएगा।

(iii) प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर रोजगारोन्मुख शिक्षा एवं शिक्षण पद्धति के बीच मौजूद संबंधों की व्याख्या किया जाएगा।

(iv) आत्म अभिव्यक्ति, अनुशासन, समूह चर्चा, खेल–कूद तथा अन्य संबंधित पक्षों के साथ शिक्षण पद्धति के सरोकारों का विश्लेषण किया जाएगा।

(v) प्रस्तुत अध्ययन के आधार पर भूमण्डलीकरण तथा बाजारवाद के आलोक में पाठ्यक्रमों तथा शिक्षण पद्धति के संबंध में सूचनाओं का संकलन किया जाएगा।

(vi) उच्च शिक्षण संस्थानों में लैंगिक विभेद के परिप्रेक्ष्य में शिक्षकों का दायित्व एवं शिक्षण पद्धति का भी मूल्यांकन किया जाएगा।

उपकल्पना

1986 में नई शिक्षा नीति की घोषणा की गई। तथ्यों तथा आंकड़ों के आधार पर स्पष्ट होता है कि बिहार में उच्चतर माध्यमिक कक्षाओं को डिग्री कॉलेज तथा विश्वविद्यालयों से अलग नहीं किया किया जा सका है। अधिकांश शिक्षकों तथा छात्रों में कम्प्यूटर तथा इंटरनेट की तकनीकी जानकारी नहीं होने के कारण अध्ययन–अध्यापन

प्रभावित हो रहा है। परम्परागत पाठ्यक्रम तथा अध्ययन पद्धति को बरकरार रहने के कारण शिक्षित बेरोजगारों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। उच्च शिक्षण संस्थानों में लैंगिक विभेद का भी अनुभव किया जाता है। छात्राओं के व्यक्तित्व के विकास के लिए समुचित साधन तथा अवसर उपलब्ध नहीं है। शिक्षण संस्थानों में लम्बे समय से शिक्षकों का पद रिक्त है। अधिकतर पुराने शिक्षक प्रशिक्षित नहीं है। फलतः शिक्षण पद्धति प्रभावी होती है। पर्यावरण, मानवाधिकार, सूचना का अधिकार तथा अन्य जीवन मुद्दों का लगभग अभाव पाया जाता है। अतः वर्तमान दौड़ में समय के अनुरूप पद्धति को प्रभावी बनाने की आवश्यकता है।

अध्ययन विधि

प्रस्तुत अध्ययन हेतु बहुस्तरीय निर्देशन पद्धति के आधार पर पटना प्रमण्डल का चयन किया जाएगा। पटना प्रमण्डल के मुख्यालय पटना नगर सात विश्वविद्यालयों का केन्द्र स्थल है। पटना में 24 अंगीभूत महाविद्यालय तथा 20 संबद्धन प्राप्त महाविद्यालय मौजूद है। तकनीकी शिक्षा के क्षेत्र में भी पटना नगर अग्रसर है। पटना, आरा, तथा नालन्दा में अवस्थित उच्च शिक्षण संस्थानों का अध्ययन एवं सर्वेक्षण किया जाएगा। अध्ययन हेतु प्रतिनिधित्वपूर्ण तथा पर्याप्त अध्ययन विधि का चयन किया जाएगा। कार्य के क्रम में जहाँ विश्लेषनात्मक अपनायी जाएगी, वहाँ विवेचनात्मक का भी सहारा लिया जाएगा, क्योंकि विषय प्रतिपादन के लिए ये दोनों ही उपयुक्त प्रतीत होता है। इनके प्रयोग से हमारा कार्य ठोस और संतुलित हो पायेगा और किसी प्रकार की त्रुटि न आने की संभावना रहेगी।

प्राथमिक तथा द्वितीय स्रोत के आधार पर गहन एवं गंभीर तथ्यों का विश्लेषण किया जाएगा। प्रारंभिक स्रोत में उच्च शिक्षा के शिक्षण का मूल्यांकन से संबंधित लिए गए शिक्षकों का साक्षात्कार सूचना और तथ्य प्राप्त कर उनका उपयोग किया जायेगा। साक्षात्कार, अनुसूची, अवलोकन तथा जीवन इतिहास पद्धति के आधार पर विश्वसनीय सूचनाओं का संकलन किया जाएगा। इसके अलावा विभिन्न शैक्षिक संस्थानों और कार्यालयों से भी सामग्रियाँ उपलब्ध की जायेगी, जिसको शोध कार्य का पूरा किया जा सके। द्वितीय स्रोत में विषय से संबंधित विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं की सहायता से ली जायेगी और आवश्यकता पड़ने पर विषय विशेषज्ञ लोगों के साक्षात्कार से मदद ली जाएगी, जिससे शोध कार्य मजबूती के साथ पूरा किया जा सके। साथ ही इंटरनेट, ई–मेल, डाटा तथा अन्य आधुनिक तकनीकी साधनों का भी उपयोग किया जाएगा। प्राप्त तथ्यों का सांख्यिकीय विश्लेषण किया जायेगा और फिर शोध–कार्य का प्रतिवेदन प्रस्तुत किया जायेगा।

निहितार्थ

उच्च शिक्षा में शिक्षण पद्धति के ऊपर शोध करके उस शिक्षा को भविष्य के लिए अच्छा बनाया जा सकता है, जिससे हमारे समाज में रोजगारमुखी, व्यक्तित्व विकास, राष्ट्रीय विकास में योगदान किया जा सकता है।

निष्कर्ष

शिक्षा में गुणवत्ता लाने के लिए जरूरी है कि शिक्षा के उद्देश्यों के निर्माण भौतिक, सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक पर्यावरण के आधार पर किया जाए। सीखने के लिए उचित पर्यावरण का होना बहुत आवश्यक है और उसके लिए छात्रों के आसपास का वातावरण अधिगम एवं शिक्षा के लिए अनुकूल बनाना अतिआवश्यक है। शिक्षा को जीवन की प्रयोगशाला कहा गया है, शिक्षा ही वह सशक्त उपागम है, जिसके द्वारा व्यक्ति विभिन्न संस्कारों के माध्यम से अपने शरीर, मन और आत्मा का समन्वित विकास कर समाज एवं राष्ट्र का योग्य नागरिक बनता है। नागरिकों को अपनी सम्भावनाओं की सर्वोच्चता पर प्रतिष्ठित करना गुणात्मक शिक्षा कार्य है, परन्तु वर्तमान शिक्षा प्रणाली राष्ट्र निर्माण से दूर होकर सैद्धान्तिक व सुचनात्मक होती जा रही है। समाज और उसकी समस्याओं से शिक्षा का संबंध विच्छेद सा होता जा रहा है। शिक्षा प्रणाली में समग्रता का अभाव–प्राथमिक, माध्यमिक एवं उच्च शिक्षा जैसे कई स्तर बन गए हैं, जहाँ माध्यमिक शिक्षा के प्रति सरकार का दृष्टिकोण उदासीन है, वहीं प्राथमिक शिक्षा का सार्वभौमीकरण एवं उच्च शिक्षा का वैश्वीकरण हो रहा है। माध्यमिक शिक्षा एवं उच्च शिक्षा की आधारशिला तथा तैयार की अवस्था है। यदि इसकी नींव ही कमजोर हो, तो फिर उच्च शिक्षा का भवन कैसे लगेगा, इसका सहज अनुमान लगाया जा सकता है।

संदर्भ सूची

1. शर्मा आर. ए., (2007), *शिक्षा अनुसंधान,* आर लाल बुक डिपो, मेरठ।
2. पाठक पी.डी., (2007), *शिक्षा मनोविज्ञान,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. सिंह रामपाल, (2008), *शैक्षिक अनुसंधान एवं सांख्यिकी,* अग्रवाल पब्लिकेशन, आगरा –7।
4. कपिल एच.के., (2007), *अनुसंधान विधियाँ,* एच. पी. भार्गव बुक हाउस आगरा।
5. अस्थाना बिपिन, (2005), *मनोविज्ञान और शिक्षा में मापन एवं मूल्यांकन,* विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा, 2।
6. भार्गव महेश, (1982), *आधुनिक मनोवैज्ञानिक परीक्षण एवं मापन,* पृ.क्र. 245–267।
7. भटनागर सुरेश, (2000), *शिक्षा मनोविज्ञान,* आर लाल बुक डिपो मेरठ मोतीबाजार।
8. सक्सेना स्वरूप, (2006), *उदीयमान भारतीय समाज में शिक्षक,* आर लाल एन.आर. चतुर्वेदी शिक्षा बुक डिपो निकट गर्वमेंटइंटर कालेज मेरठ।
9. त्यागी एवं पाठक, (2000), *शिक्षा के सामान्य सिद्वांत,* विनोद पुस्तक मंदिर आगरा –21।

****